अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

हिन्दी कविता में महात्मा बुद्ध

दि॰ रसांगी नानायककार (श्री लंका)
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी-221005

सारांश :

आज से 2500 वर्ष पूर्व भारत में लुम्बिनी साल वन में सिद्धार्थ के रूप में बुद्ध का आविर्भाव हुआ था। जब सिद्धार्थ कोलौकिक सुख से तंग आगया, तब वेसारे सुखों को त्याग कर संसार से दुःख को मिठाने का मार्ग ढूंढने निकले। तब उनकी उम्र उनतीस साल थी। उन्होंने बहुत कष्ट भोगे, बिना खाये- पिये ध्यान में लीन रहे। पर उससे कोई फल न पाने पर माध्यम मार्ग में आकर पैंतीस साल की अवधि मेंमहा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। तब से आज तक उनका उपदेश लोगों के मनः पटल में ऐसे चित्रित है जैसे पत्थर का लकीर। वेएक समाज सुधारक ही नहीं दार्शनिक, मनोविज्ञानी के रूप में भी हमारे सामने आते हैं। लोगों की मानसिकता को उनके सामाजिक परिवेश को समझ कर बुद्धा जी नेउपमा उपमेय के आधार से धार्मिक उपदेश दिया करते थे। उनकेये मधुर वाणी आज भी प्रासंगिक है। अदिकाल के हिन्दी कविताओं पर ही नहीं बल्कि आधुनिकहिन्दी कविताओं में भी उनके उपदेशों का भरमार झलक देखने को मिलता है।

मूल शब्द : महा ज्ञान, परिनिर्वाण, भरमार

प्रस्तावना: शोध विधि:

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक प्रस्तुति का है। शोध कार्य के लिए मूल ग्रन्थ एवं सहायक ग्रन्थ का आधार लिया गया है।

भूमिका :

संसार को जरा, मरण, दुखों से मुक्ति दिलानेवाला, महान मार्गोपदेषक गौतम बुद्ध का जन्म ई.सा पूर्व 563, लुम्बिनी में हुआ था। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। छोटे उम्र में ही वे ध्यान किया करते थे। उनके अंदर करुणा, दया आदि के बीज दिखते थे। एक बार देवदत्त से मारकर गिराये हुए हंस को बचाकर उन्होंने यह सिद्ध किया कि मारनेवाले से बचानेवाला श्रेष्ठ है।

सभी शिल्पों में निपुण शाक्य कुल के राज कुमार सिद्धार्थ गौतम का विवाह सोलह साल में ही कोलिय वंश की राज कुमारी यशोधरा से हुआ था। विवाहोपरान्त कितना भी सुख, सम्पत्ति भोगने को मिलने के बावजूद भी वे राजकीय उद्यान से निकल कर बाहर नगर के पथ दर्शन करने जा रहे थे। एक दिन उनका मन, सामने आया हुआ, बुढ़ापे के मारे क्षीण काय एक अस्थिपंजर, वेदना से कराहने वाला एक पीडित रोगी, एक शव को देखकर, मनुष्य के जीवन में आने वाले परिवर्तनों पर विचलित हो गया। इसके बाद में जो एक शान्त भाव के सन्यासी सामने आया तो उन्होंने भी जीवन के जरा, व्याधि, मरण आदि से मुक्ति पाने को और संसार को मुक्ति दिलाने को ठान लिया। अपने एक मात्र प्रथम नवजात शिशु राहुल और धर्मपत्नी यशोधरा को त्याग कर छब्बीस साल में ही उन्होंने एक श्रमण का वेष धारण कर लिया। कई साल सत्य के खोज में अलग-अलग गुरुओं के सम्पर्क आये। दो साल तक बिना खाये-पिये ध्यान किया करते थे। इस तरह छः साल तक कष्ठ सहने के बाद मध्यम मार्ग को अपनाया और तीस साल के उमर में उनको सत्य का बोध हो गया यानी बुद्धत्व की प्राप्ति हो गयी। तब से उन्हें 'तथागत' कहलाने लगे। इसका अर्थ है सत्य को प्रप्त करनेवाला।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

तथ्य विश्लेषण :

बुद्ध ने लोगों को सही पथ दिखाया था। उनके उपदेशों से मानव ही नहीं दानव जाति भी सुधर गये। बद्ध के अनुयायी, धर्म प्रचारक आज भी देश-विदेशों में देखने को मिलते हैं। उन्होंने अपने उत्तम और प्रभावपूर्ण उपदेश और व्यक्तित्व से समस्त जगत कल्याण और मनुष्य जाति की उन्नति के लिए प्ररणा प्रदान की थी। सत्य, दया, करुणा, उदारता, आत्मसंयम आदि अलौकिक गुणों को अपने जीवन में लाने का उपदेश उन्होंने दिया। बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद सम्राट अशोक के शासन में भी धर्म के प्रचार के लिए बड़ी सहायता मिली। पर इसके बाद के राजा कनिष्क के समय में बौद्ध धर्म नष्ट होती जाने के कारण धर्म संगीति करना पड़ा। इन संगीतियों में बुद्ध के वचनों को उधृत करना, दुहराना, गाना आदि कार्य उनके प्रिय शिष्य बड़ी निपुणता के साथ करते थे। उस समय साहित्यिक भाषा संस्कृत और पालि थी। गुप्त काल 'संस्कृत साहित्य' का 'स्वर्णिम युग माना जाता है।

आरमभ में त्रिपिटक, महावग्ग, दीघ निकाय, मज्झिम निकाय, थेरीगाथा आदि ग्रंथों में बुद्ध के उपदेश एवं गुण अंतर्गत कविता पालि, संस्कृत भाषा में मिलती थी। भक्ति युग में आते-आते गुरु को बड़ा महत्व दिया गया था। भगवान बुद्ध भी एक अच्छे गुरु थे। उपदेशों के द्वारा मानव जाति का सुधार करते थे। भक्ति युग के महान संत कबीरदास भी बुद्ध के उपदेशों को अपने दोहे में अंतर्गत कर लिया था। वे अनपड़ थे, फ़िर भी सभी महात्माओं की उपदेशों से प्रभावित हो कर दोहा रचने लगे। उस समय महत्मा बुद्ध न होने के बावजूद भी समज में बौद्ध धर्म सहज रूप में था। बौद्ध प्रभाव कबीर के दोहों में भी दिखते है।

जाति भेद के लिए बौद्ध धर्म में कोई भी स्थान नहीं था। जो कोई भिक्षुत्व स्वीकार करता है, उसे अपनी जाति गोत्र आदि त्याग कर "शाक्य पुत्र" बनना पड़ा। सब नदी व नाले जिस प्रकार महा समुद्र से मिलने के बाद अपने नाम, आकार को छोड़ कर एकाकार हो जाते हैं, उसी प्रकार बौद्ध धर्म में दीक्षा मिलने के बाद, सब "बौद्ध भिक्षु" नाम से जाने जाते है। यहाँ समता का भाव देख सकते है। कबीर दास में भी वहीं भाव झलक रहा है। उनके लिए न कोई मुसलमान है, न हिन्दू, ना सीख। सब बराबर मनुष्य जाति हैं।

जाति का विरोध महात्मा बुद्ध ने भी किया है। जाति-गोत्र से ज्यादा उनके आचरण पर ध्यान देना चाहिए, उन्होंने बताया था। कबीरदास भी वहीं बात अपनें दोहे से बताते थे।

"जाति न पूछो साधु के, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार क, पड़ी रहने दो म्यान।।"

मूर्ति पूजा का खंडण बुद्ध ने भी किया था। वहीं बात कबीर भी कहता है।

"पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहार।
ता ते तो चाकि भलि पीस खाय संसार।।"

'क्षणिकता' बौद्ध धर्म के मूल मंत्र है। भगवान बुद्ध ने भी बताया कि 'यह संसार पानी के बुल-बुल की तरह क्षणभंगूर' होता है। सभी भौतिक वस्तुएँ नष्ट होती है। जहाँ तक कि मानव शरीर भी। कब, कहाँ यह शरीर पंजर को छोड़ना पड़ेगा कोई बता नहीं पाएगा। सब नित्य नहीं होता। अनित्य है। यहीं भगवान बुद्ध का मूल मंत्र कबीर दास भी बताये है।

"यह तन काचा कुंभ है, लियाँ फिरै था साथि।
ठपका लागा फुटि गया, कछू न आया हाथि।।"

बुद्ध के उपदेशों के अनुसार दुःख का मूल कारण तृष्णा है। इस तृष्णा का कबीरदास जी ने खूब भर्त्सना की है। क्योंकि यह तृष्णा माया बन कर आती है और व्यक्ति को कर्म के फंदे में डालते है। कबीरदास लिखते हैं,

" 'कबीर' माया पापणी, फंध ले बैठी हाटि।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

सब जग तौ फंधै पडय, गया कबीरा काटि।। ”

कबीर दास भी भगवान बुद्ध की तरह निर्वाण मानते हैं। वे कहते हैं कि निर्वाण वह अवस्था है जो परमसुख और शान्ति प्रप्त होती है। सभी पापों को स्वयमेव नष्ट हो जाता भी है।

“आतम अनुभव ज्ञान की, जो कोई पूछे बात।
सो गंगा गुड़ खाय के, कहे कौन मुख स्वाद।।”

परमात्मा के ज्ञान का आत्मा में अनुभव के बारे में यदि कोई पूछता है, तो इसे बतलाना कठिन है। एक गूंगा अदमी गुड़ खाडसारी खाने के बाद उसके स्वाद को कैसे बता सकता है।[1]

कबीरदास ही नहीं मध्यकालीन कवि स्वामी रमानन्द, रैदास, मीरा बाई, सूरदास आदि भी भगवान बुद्ध की उपदेशों से प्रभावित थे। उनकी कविताओं से यह बात स्पष्ट दिखाई देता है। ‘रामचरित मानस’ में तुलसीदास जी की कहना है काम, क्रोध, ईर्श्या आदि मोहान्धकार में पड़ने वाले व्यक्ति अपना ही नहीं दूसरों का भी सुख- संतोष नष्ट कर देता है, जबकि पहले बुद्ध ने इन्हीं बातों पर बल दिया था।

“नर सरीर धरि जे पर पीरा।
करहिं ते सहहिं महा भव भीरा।।
लकरहिं मोह बस नर अघ नाना।
स्वारथ रत परलोक नसाना।।”

अर्थात, मनुष्य का शरीर धारण करके जो लोग दूसरों को दुःख पहूँचता है, उनको जन्म-मृत्यु के महान् संकट सहने पड़ते हैं। मनुष्य मोहवश स्वार्थपरायण होकर अनेकों पाप करते हैं। इसी से उनका परलोक नष्ट हुआ रहता हैं।[2]

सूफ़ी काव्यधारा में भी बहुत कम मात्रा में बौद्धों का प्रभाव देख सकते हैं। उनकी उपासना भी सगुण साकार भगवान के प्रति है।

सूफ़ी काव्यधारा के प्रमुख कवि ‘जायसी’ ने अपने ‘पद्मावत’ ग्रंथ में परमतत्व के बारे में बताते है।

“है नाहीं कोई नाकार रूपा। ना ओहिं सन कोई आहि अनूपा।.....”[3]

रीति काल में मूगल साम्राज्य होने के कारण ऐसी कविताएँ नहीं पायी जाती है, जिसमें बुद्ध के प्रभाव हो।

आधुनिक काल तक आते-आते गाँधी प्रभाव कविताओं में झालक रह गया। गाँधि जी के अहिंसा और सत्य के सिद्धान्त बुद्ध जी के उपदेशों को साक्षात प्रस्तुत करते हैं। अशोक-कालीन भारत के महान प्रणवायु महत्मा बुद्ध के पाद-मुद्रा को उन्होंने स्वीकार किया है। तो उस समय के लिखे गये कविताओं से यह अनुभव होता है कि कतिपय काव्य बुद्ध जी के जीवन-चरित्र के सम्यक् वर्णन के लिए लिखे गये है।

संस्कृत के महाकवि **‘अश्वघोष’ के ‘बुद्ध चरित’**, अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध कवि **‘एडविन अर्नोल्ड’** के अलावा **‘सुश्री अनुपम शर्मा’** का शुद्ध खड़ी बोली भाषा का महाकाव्य **‘सिद्धार्थ’** आधुनिक युग के शुरुआती दौर की कविताएँ है। कहा जाता है कि **हरिऔद के ‘प्रिय प्रवास’**,और **‘गाँधी दर्शन’** इस प्रबन्ध काव्य के लिए प्रेरणास्रोत बने है।

‘सिद्धार्थ’ महाकाव्य का आरम्भ रमणीय कपिलवस्तु और शाक्य कुल के राजा शुद्धोदन के वर्णन से किये गये हैं। इसी पुण्य भूमि में सिद्धार्थ गौतम का जन्म हुआ और यह बात सुन सभी आनन्द में विभोर हो गये थे।

“संसार के सुखद, भूतल के विजेता

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

निर्वाण शांति-प्रद गौतम देव आये।"

सिद्धार्थ का जन्म लोक हित के लिए था। इस बात को कवि ने इन पक्तियों द्वारा व्यक्त किया है।

"उत्पन्न है कमल मानव मानसों का
जो काम-कंटक विहीन सदा रहेगा
नाना प्रदेश-पुर-आगत भृंग-प्रेमी
गंधोपदेश सुख-धाम प्रकाम लेंगे।"[4]

बचपन में देवदत्त के आखेट से घायल हंस के जान बचा कर उन्होंने यह सिद्ध किया कि बचपन में ही उनके अंदर करुणा का भाव है। यह बात बड़े होने के बाद भी उनके मन में कटकता रह गया। यह हिंसक संसार से गृणा होने लगा। मनुष्य जाति को हिंसक, भक्षक भाव से मुक्त करने के लिए अपने सुख-भोग को त्याग कर उन्होंने सत्य की खोज में पलायन किया। तभी उनको जीवन की क्षणिकता का बोध हुआ। उनके मुँह से यह शब्द निकले.....

"क्षणिक जीवन है यह श्वास-सा
निकलता, हिचकी बस एक है -
अचिर फुल्ल प्रसून सुगन्धि जो
दिवससंग ही छिप जाएगी।"[5]

संसार के क्लेशों के बारे में सिद्धार्थ के विचार और भी गहराई से उनके मन में जमते थे।

"अहो, प्राणि कैसे अवनितल पै क्लेश सहते,
दुखी हो, रोगी हो, मृत बन पुनः जन्म धरते
सदा भोगों में वे रथ रह अधी हाय! बनते
यहीं क्या भोगों का अथ, हति यही क्या जगत की?"

डॉ० जगदीश कुमार कृत "निर्वाण" आधुनिक हिन्दी साहित्य का एक मुख्य प्रबन्ध काव्य है। निर्वाण या तो मोक्ष मनुष्य जीवन का परम पुरुषार्थ माना गया। इस काव्य, महात्मा बुद्ध के परम उद्देश्य को व्यक्त करती है। सांसारिक दुःख क्लेशों से विमुख हो कर निकलनेवाले सिद्धार्थ के संसार के क्षणिकता का आभास होता है।

कवि का कहना है,

"क्षणिक जग में आनन्द-विहार,
अमित है दुःख का पारावार।"[6]

इस कविता में कवि यह भी बताते हैं कि जरा-मरण जैसे दुःखों से जीवन भर जाने के बाद भी मनुष्य को उससे विमुख होने का कोई भी इच्छा नहीं होती बल्कि और भी उसी विषय वासनाओं में लीन होते रहते हैं। इस आशय को कवि अपनी कविता से दर्शाते है;

"मनुष्य के प्राप्य जरा, मृति, रोग,
किन्तु फ़िर भी विषयोन्मुख लोग।
भूलते यौवन मद में चूर,
रूप बल नश्वर यथा कपूर।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

क्षणिक ज्यों सरि के बुद्बुद् झाग,
असत ज्यों माथ-मरीचि-तड़ाग्।"[7]

मैथिलीशरण गुप्त जी रचित खण्ड काव्य "**यशोधरा**" को भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित मुख्य घटना को दर्शाने के कारण हिन्दी साहित्य जगत में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। सिद्धार्थ गौतम के सब कुछ त्यागने के बाद उनकी पत्नी 'यशोधरा' के कई करुणाजनक मनोदशाओं को कवि, पाठक के सामने ले आते हैं। अपनी अद्भुत कल्पना द्वारा बुद्ध के जीवन के सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर उन्होंने यशोधरा को अंकित किया है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में यशोधरा का इतना व्यापक और कारुणिक चित्रण कहीं नहीं मिलता।

संसार की असारता ने गौतम को वैरागी बनाया है। परिणामस्वरूप महाभिनिष्क्रमण करना पड़ा। इस पर गौतम का कहना गुप्त जी इस तरह सामने लाते है।

"देखी मैंने आज ज़रा।
हो जावेगी क्या ऐसी ही मेरी यशोधरा?
हाय! मिलेगी मिट्टी में वह वर्ण-सुवर्ण खरा?
सूख जाएगा मेरा उपवन, जो है आज हरा?
सौ-सौ रोग खड हों सम्मुख, पशु ज्यों बाँध परा,
धिक! जो मेरे रहते, मेरा चेतन जाय चरा?
रिक्त मात्र है क्या सब भीतर, बाहर भरा भरा?
कुछ न किया, यह सूना भव भी यदि मैंने न तरा।"[8]

सिद्धार्थ के चले जाने के बाद सशोधरा शोक-समुद्र में डूब जाती है। अपने मन को साँतवना देती हुई वे कहती हैं;

"जायँ, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुःखी न हों इस जन के दुःख से,
उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से?"

मैथिलीशरण गुप्त जी की एक पद्य नाटक भी है, जिसका नाम है,'**अनघ**', बुद्ध के जीवन और उनके आदर्शों को दर्शाता है। उसके मुख्य पात्र मघ है। करुणा की महत्व और करुणा बनने का उपदेश अपने अनुयायियों को सुनाते हुए मघ कहते है;

"पापों से घृणा करो, प्रयत्न करो, पापी का,
व्यंग्य छोड़ संग दो सदैव अनुतापी का।"

गौतम बुद्ध के जीवन से संबंधित दार्शनिक गीतिकाव्य '**कुणालगीत**' भी **मैथिलीशरण गुप्त** जी की एक अनुपम रचना है। सौतेली माँ के दुर्व्यवहारों से अंधा बने कुणाल अपनी पत्नी कांचनमाला के साथ गली गली घूमता है। एक बार उसके मुँह से निकली जो शब्द से कवि बुद्ध का नाम स्मरण कराते है।

"मेते है सब जगती के जन,
जहाँ रहूँ मैं मेरा घर,
चलता हूँ मैं अंधा हो कर,
आज तथागत के पथ पर।"[9]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

कविवर 'अरुणा' जी का प्रेम प्रधान एक खंड काव्य है '**आम्रपाली**' इसमें भी बुद्ध के तत्वों के उल्लेख मिलते है। आम्रपाली बुद्ध काल की एक नर्तकी थी बाद में बुद्ध के धर्म को सुन के उनका दर्शन करके अनुयायी बनी थी। बुद्ध जी ने सभी मनुष्यों को एक ही दृष्टि में देखा है। करुणा के अपार सागर महत्मा बुद्ध के बारे में उसमें ऐसे गाया जाता है, जैसे;

"सब का सम-अधिकार प्राप्त है, विश्व चेतना लाली में।
समता का आदर्श व्याप्त हो, यही बुद्ध की वाणी है,
मानवता हो मुक्त, यही गौतम की अमर कहानी।
सागर से भी अधिक तथागत की आँखों में पानी है,
राजा है आनन्द और करुणा ही उसकी रानी है।"

अपनी आम्रवाटिका में भगवान बुद्ध का पदार्पण करने की बात सुन कर वे बेहद खुश हो जाती है। महात्मा बुद्ध के बारे में उनका कथन है;

"कितना प्रकाश
कैसी आभा,
कितनी प्रदीप्त,
कैसी है उनकी ज्योति,
किरण कितनी है उनके प्राणों में,
मुस्कान,
एक मुस्कान ज्ञान से आती है।
रोशनी वहाँ भी छाती है,
देखी मैंने-
गंभीर, धीरे,
विश्रान्त, शान्त,
एकान्त मूर्ति कितनी ज्योतित
ज्योतिर्मय महासमुद्र ध्यान में सदा लीन
कितना प्रवीण तप में जीवन,
आनन्द, महाआनन्द व्याप्त है सभी ओर,
आ सकती वहाँ हिलोर नहीं
लगता है जैसे शुभ्र मोर
अरुणिमा एक छायी विमुग्ध नीलाम्बर में
निस्तब्ध चित्र पर एक बूँद आँसू केवल
इतनी करुणा मन की अरुणा
इतना प्रशान्त अंतरानन्द
सर्वत्र शान्ति, सर्वत्र शान्ति।"[10]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

सोहनलाल द्विवेदी कृत 'वासवदत्ता' भी एक सुन्दर खण्ड काव्य है, जो भगवान बुद्ध सम्बन्धित है। वासवदत्ता द्ववारा बुद्ध के प्रति प्रेम और उनके द्वारा ठुकराया जाना कवि मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है।

वासवदत्ता की बातों को अस्वीकार करते हुए वैरागी बुद्ध शान्त भाव से कहते हैं;

"आऊँगा देवी। फिर
होगी जब कभी तुम्हें
मेरी टोहबाट में।" [11]

त्रिवेदी रामानन्द शास्त्री की कविता 'मृगदाव' में भी भगवान बुद्ध के बारे में सुन्दर वर्णन मिलता है।

मृगदाव, सारानाथ को कहते है। वहाँ के मंदिरों में जपान के महान चित्रकार द्वारा बनाये गये भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित बहुत सारे बित्ति चित्र मिलते हैं। वे बहुत आकर्षक भी है। वहाँ की यात्रा किये हुए इस कविवर भी उस चित्र पर फ़िदा हो गये और 'मृगदाय' नामक काव्य संग्रह का निर्मान करने लगे।

कवि का कहना है कि बुद्ध के चरणें के स्पर्ष से शायद मृगदाय इतना अलौकिक हुआ होगा। इसी आशय को कवि व्यक्त करते है-

"परिवर्तित हो गया हिंसकों,
का भी क्रूर स्वभाव,
एक अलौकिक आभा से,
आलोकित था मृगदाव।"

सभी सुखों के बीच जन्म लेने वाले गौतम बुद्ध, दुःख के कारण वैराग्य की ओर उन्मुक्त हो गये। दुःख नामक दावानल से जगत की रक्षा करने के लिए ही बुद्ध का आगमन इस संसार में हुआ था। इसी आशय को कवि व्यक्त करता है;

"बुझ जाएगा दुःख-दावानल,
ये होगी पर्जन्य,
विकल विश्व का विपद मिटाने
ये आये हैं धन्य।"[12]

चरों ओर रहने वाले जीवों के प्रति दया की वर्षा उन्होंने की है। इसी आशय को कवि व्यक्त करते है;

"डरते सिद्धार्थ नहीं मत्त गजराज से,
प्रेम करते थे वे गजेन्द्र युवराज से।
देख उन्हें अश्व घन हेषा-रव करते....."

जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' महाकाव्य में भी कई तत्व मिलते है कि बौद्ध दर्शन के दःख, अनित्यता के सिद्धान्तों को सामने लाता है। क्षनिकवाद से प्रभावित हो कर प्रसाद जी ने कामायनी के अनेक स्थलों पर इसको अभिव्यक्त किया है।

"मौन। नाश। विध्वंस। गंधेरा।
शून्य बना जो प्रकट अभाव,
वही सत्य है, वही अमरते।
तुझको यहाँ कहाँ अब ठाँव।"

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12-Issue 01, (January-March 2024)

प्रसाद जी अहिंसा के समर्थक भी थे। अहिंसा और करुण से प्रभावित हो कर उन्होंने हिंसा का तिरस्कार किया था।

"पर जो निरीह जी कर भी कुछ
उपकारी होने में समर्थ,
वे क्यों न जिये उपयोगी बन,
इसका मैं समझ सकी न अर्थ।"

इस प्रकार आदिऔर भक्ति काल की कविताओं में ही नहीं आधुनिक कविता में भीबुद्ध की चर्चा पर्याप्त मात्रा में हुआ है। उपर्युक्त इन बातों से पूर्णतः यहस्पष्ट होता हैं कि हिन्दी कविताओं में बुद्ध के बारे में पर्याप्त मात्र में चर्चा होती रहती है ।

संधर्भ सूची:

1) https://karmabhumi.org/kabir-experience/
2) https://bharatdiscovery.org/india/नर_सरीर_धरि_जे_पर_पीरा
3) https://www.hindi-kavita.com/HindiPadmavatJayasi.php
4) सिद्धार्थ, अनूप शर्मा, पृ० 24
5) https://epustakalay.com/book/56384-siddharth-mahakavy-by-anoop-sharma/https://epustakalay.com/book/56384-siddharth-mahakavy-by-anoop-sharma/
6) निर्वाण-जगदीश कुमार, पृ० 20
7) निर्वाण-जगदीश कुमार, पृ० 42
8) यशोधरा-मैथिलीशरण गुप्त, पृ०15
9) कुणालगीत-मैथिलीशरण गुप्त, पृ०36
10) आम्रपाली-पौद्दार रामावतार 'अरुण', पृ० 127
11) वासवदत्ता-सोहनलाल द्विवेदी, पृ०4
12) मृगदाव-त्रिवेदी रामानन्द शास्त्री, पृ०7